आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2325 • उदयपुर, गुरुवार 06 मई, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्

सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

ब्लू ऑरिजिन मिशन के अंतरिक्ष में कदम

अंतरिक्ष पर्यटन हमेशा ही लोगों को आकर्षित करता रहा है। इंसान को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन तक पहुंचाने के लिए अमेजन के संस्थापक जेफ बेजोस की निजी स्पेस कम्पनी ब्लू ऑरिजिन के मिशन ने भी कदम बढ़ाए है। ब्लू ऑरिजिन ने बुधवार को अपने सब–ऑर्बिटल स्पेस लाइट न्यू शेपर्ड के जरिए 'एस्ट्रोनॉट रिहर्सल' को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। बताते चलें कि न्यू शेपर्ड पूरी तरह ऑटोनॉमस सिस्टम है। ब्लू ऑरिजिन के कार्मिकों ने अंतरिक्ष यात्री के रूप में जाने से पहले कैप्सूल मे प्रवेश किया इस वर्ष यह दूसरी बार था जब रॉकेट सफलतापूर्वक लांच हुआ। ब्लू ऑरिजिन ने इसके लिए पूरी तैयारी कर रखी थी क्योंकि उसे उम्मीद है कि एक दिन आएगा जब मिशन किराया भुगतान कर अंतरिक्ष यात्रा करने वालों को साथ ले जाएगा। पश्चिमी टेक्सास में ब्लू ऑरिजिन की लांच साइट से शुरू हुआ यह मिशन अंतरिक्ष यात्रियों के लिए एक कदम का गवाह बना।

ब्लू ऑरिजिन ने एक बयान में कहा है कि रिहर्सल के एक हिस्से के रूप में आज हमारा कदम ठीक उसी दिशा में उठा है जैसा कि भविष्य में यात्री लांच के दिन अनुभव करेंगे। कंपनी ने इस आयोजन को लाइव दिखाया। कैप्सूल के लौंडिंग के वक्त बादलों मे धूल के गुबार दिखाई पड़ रहे थे। लांचिग से स्टेण्ड–इन एस्ट्रोनॉट्स ने लांच टावर पर चढ़कर चालक दल के चैम्बर में कदम रखा। उन्होंने खुद को उपकरणों से सुसज्जित किया और कमांड सेंटर के साथ संचार साधनों की जांच की। उन्होंने 60 फुट लम्बे रॉकेट के क्रू क्वार्टस से निकलने के पहले दरवाजों को धीरे से बंद किया। न्यू शेपर्ड उड़ान भरता हुआ 60 मील से अधिक 'कारमन लाइन' (जिसे उस बिन्दु के रूप में पहचाना जाता है जहां से अंतरिक्ष शुरू होता है, यह लाइन पृथ्वी के वायुमंडल से बाह्य अंतरिक्ष को अलग करती है) तक गया। इसके बाद बूस्टर्स चालक दल के कैप्सूल से अलग हो गए और धीरे–धीरे पृथ्वी पर उर्ध्वाधर लौंडिंग के लिए वापस चले गए। इंजन से अलग होने के बाद क्रू कैप्सूल ने कुछ मिनट माइक्रो ग्रैविटी में बिताए। यात्रा का कुल समय सिर्फ दस मिनट से ज्यादा का रहा। वर्ष 2015 के बाद से कंपनी की यह 15वी टेस्ट लाइट थी। इस अभ्यास को एनएस–15 नाम दिया गया है। कंपनी का कहना है कि उसका एयरक्राफ्ट बहुत जल्द ही यात्रियों को अंतरिक्ष में ले जाएग।

न्यू शेपर्ड को इस तरह डिजाइन किया गया है कि उसमें छह यात्री जा सकते हैं। इसमें बड़ी खिड़कियां लगी है जिससे यात्री बाहर के दृश्यों का आनंद ले सकते हैं। व्हीकल का नामकरण 1961 में अंतरिक्ष में उड़ान भरने वाले पहले अमरीकी एलेन शेपर्ड के नाम पर किया गया। स्पेसएक्स संभवतः इस वर्ष तक सबसे पहले सभी सिविलियन क्रू को अंतरिक्ष में ले जाने की योजना बना रहा हैं। दशकों के सरकारी एकाधिकार के बाद इंसान की अंतरिक्ष यात्रा जल्द ही निजी उद्यम बन सकती है। ब्रिटिश उद्यमी रिचर्ड ब्रैनसन की कंपनी वर्जिन गैलेक्टिक भी इसी दिशा में प्रयासरत है।

अध्ययन : यूरोप का 4000 साल पुराना मानचित्र

फिनिस्टेर, ब्रिटनी में वर्ष 1990 में एक मैदान की खुदाई से मिले पत्थर के स्लैब (सेंट बेलेक स्लैब) पर बना नक्शा संभवत : यूरोप का सबसे पुराना मानचित्र है। इसे करीब 4000 साल पहले का कांस्य युगीन (2150–1600 ईसा पूर्व) माना जा रहा है। बोर्नमाउथ यूनिवर्सिटी के लेखक क्लेमेंट निकोलस का दावा है कि संभवतः इस मानचित्र का उपयोग तत्कालीन राजा क्षेत्र विशेष पर स्वामित्व दर्शाने को करते थे।

सेवा–जगत्

दिव्यांगों को समर्पित, आपका अपना संस्थान

दीन-दिव्यांगों का मिला खुशियों का अमृत

नर में नारायण का दर्शन करने वाली आपकी–अपनी संस्था नारायण सेवा ने हरिद्वार महाकुम्भ में पिछले महाकुम्भों की ही तरह मेला परिसर में विशाल सेवा एवं कथामृत शिविर लगाया। 3 अप्रेल को इस सेवा शिविर का शुभारम्भ ध्वजारोहण विश्व शान्ति एवं कल्याण यज्ञ के साथ श्री धर्मदास महाराज गौरी शंकर जी एवं अन्य संत–महात्माओं ने किया। इससे पूर्व संस्थान के संस्थापक– पद्मश्री अलंकृत निर्वाणी आचार्य महामण्डलेश्वर पूज्य श्री कैलाश जी 'मानव' का मंगल संदेश प्रसारित किया गया। अठ्ठाईस दिवसीय सेवा शिविर के दौरान विविध धार्मिक अनुष्ठानों, भण्डारा व कथा ज्ञान यज्ञ के साथ–साथ दिव्यांगों की निःशुल्क शल्य चिकित्सा एवं सहायता का प्रभाग भी बनाया गया।

जिसका उद्घाटन उतराखंड सरकार के वन एव पर्यावरण मंत्री श्री हरकसिंह जी रावत एवं मंत्री स्वामी श्री यतीश्वरनंद जी महाराज ने किया। इस अवसर पर मेयर अनिता जी शर्मा, पुलिस अधीक्षक (गृह रक्षा दल) श्री राहुल जी सचान, पंजाबी महासभा के उपाध्यक्ष श्री जगदीश जी पाहवा, उतराखंड व्यापार संघ के अध्यक्ष श्री संजय जी चौपड़ा, जिला वन अधिकारी श्री कृष्ण कुमार जी, तहसीलदार श्री विनोद जी शर्मा, अ.भा. ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष श्री अधीर जी कौशिक, समाजसेवी श्री विशाल जी गर्ग, सहित बड़ी संख्या में अधिकारी एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। शिविर प्रभारी एवं निदेशक सुश्री पलक जी अग्रवाल ने अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि चिकित्सा शिवर में हरिद्वार एवं उसे आसपास गांवों से आने वाले बड़ी संख्या में दिव्यांगजन की निःशुल्क सुधारात्मक सर्जरी के साथ जरूरतमंदों को कृत्रिम हाथ–पैर, कैलीपर व सहायक उपकरण भी निःशुल्क दिए गए। शिविर में पूज्य कैलाश जी मानव, कमला देवी जी, अध्यक्ष सेवक श्री प्रशान्त जी भैया व निदेशक वंदना जी ने प्रवास कर मार्गदर्शन किया।

श्रीमद् भागवताचार्य पूज्य श्री श्री संजीव कृष्ण जी ठाकुर, श्री अभिषेक कृष्ण जी महाराज जी महाराज ने शिविर का अवलोकन कर ऋद्धालुओं को आशीर्वाद प्रदान किया।

सेवा, भक्ति और सत्संग की इस त्रिवेणी को प्रवाहमान बनाए रखने में संस्थान के ट्रस्टी निदेशक देवेन्द्र जी चौबीसा, रजत जी शर्मा, महिम जी जैन, रोहित जी शर्मा, राकेश जी शर्मा, डॉ. मानस रंजन जी साहू, डॉ. नेहा जी अग्निहोत्री व अनिल जी आचार्य व अरूण जी ब्राह्मण का सक्रिय योगदान रहा।

गरीब की बेटी के हुए पीले हाथ

संस्थान की नरवाना (हरियाणा) शाखा ने 10 फरवरी को खल गांव में एक गरीब परिवार की बेटी के पीले हाथ करवाने में सहयोग किया। गांव के महेन्द्र जी को आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। और परिवार में बेटी की शादी में खर्च को लेकर वे चिंतित थे। इसी चिंता में शादी से पहले ही महेन्द्र जी बीमार हो गए और चल बसे परिवार को बेटी प्रीति की शादी का सपना टूटता नजर आया।

इसी दौरान स्थानीय संस्थाओं सहित नारायण सेवा संस्थान ने शादी की आवश्यक वस्तुएं भोजन आदि का बीड़ा उठाया और धूमधाम से प्रीति का विवाह–सम्पन्न करवाया।

आस्था, श्रद्धा, भक्ति एवं भारतीय संस्कृति का मनोरम महामेला

विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक मेला है–महाकुंभ। हजारो, लाखों वर्षो से हमारे ऋषि–मुनि परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए हरिद्वार, प्रयागराज, नासिक और उज्जैन मे कुंभ का आयोजन समय–समय पर करते हैं। इस महाकुंभ में 13 अखाड़ों के सभी धर्माचार्यो, जगतगुरु, महामण्डलेश्वर, संत एक विश्वास से गंगा मे डुबकी लगाते हैं। हिन्दु धर्म के 72 शाखाएं उपशाखाएं भी कुंभ में शामिल होती है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार समुद्र मंथन के दौरान अमृत का कुंभ मिला जिसको लेकर राक्षसों और देवताओं में युद्ध हुआ। अमृत की बूंदे उपरोक्त चार स्थानों पर गिरी। जहां पर कुंभ के आयोजन सुनिश्चित हुए। अर्द्धकुंभ प्रत्येक 3 वर्ष से महाकुंभ 12 वर्ष से लगता है। जिसमें श्रद्धालुगण अमृत्व की प्राप्ति की कामना से शरीक होते है।

इस महाकुंभ में नारायण सेवा संस्थान ने भी निःशुल्क सेवा प्रकल्पों का कीर्तिमान स्थापित किया है जिसमें दिव्यांगजन के लिए सुधारात्मक सर्जरी सड़क हादसों व अन्य दुर्घटनाओं में अपने हाथ–पांव गंवाने वालों के लिए . त्रिम अंग व केलीपर लगाने की सेवा महत्वपूर्ण रही है।

सर्जरी के बाद फिजियोथेरेपी भी आवश्यक होती है। जिसके लिए भी फिजियोथेरेपिस्ट के साथ विभिन्न यंत्र भी लगाए गए। तीर्थ यात्रियों के लिए भजन–सत्संग व संतजनों एवं रोगियों के लिए नियमित भण्डारा संचालित

किया गया। इसी दौरान एक निर्धन एवं दिव्यांग जोड़े का विवाह भी सम्पन्न करवाया गया।

पुण्यार्जन के लिए इस महाकुंभ में संस्था के अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया की दृष्टि एवं मति से प्राप्त मार्गदर्शन मार्गदर्शन ने सोने में सुहागा का कार्य तो किया ही उनकी उपस्थिति में भी सेवा शिविर के कार्यो को नई ऊँचाई प्रदान करने हुए इसकी अधिक से अधिक लोगों तक लाभ पहुंचाया ।

संस्थान संस्थापक निर्वाणी पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर परम पूज्य गुरुदेव श्री कैलाश जी मानव से आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद सेवक प्रशांतभैया दिनांक 10 अप्रैल को महाकुंभ में संस्थान के सेवा शिविर में सपरिवार पहुंचे। जहां संस्थान के सेवा साधकों व अन्य श्रद्धालुओं ने भाव भीनी अगवानी की।

उनके साथ निदेशक वंदना जी अग्रवाल, सुश्री पलक अग्रवाल, महर्षि भी थे। सुश्री पलक अग्रवाल सेवा शिविर की शुरूआत से ही प्रभारी के रूप में बहुआयामी सेवा कार्यों को नेतृव्य प्रदान किया।

वल्लभाचार्य मार्ग पर अवस्थित सेवा शिविर अपनी साज सज्जा और सेवा गतिविधियों को लेकर एक अलग ही पहचान बनाये हुए था। सेवक प्रशांन्त परिवार के साथ मुम्बई प्रवासी सम्मानित अतिथि श्री महेश जी अग्रवाल व उनकी धर्मपत्नी भी थी। भैया ने यहां पहुंचते ही सबसे पहले उन दिव्यांगजन से मुलाकत की जिनकी चिकित्सा अथवा सर्जरी वहां हुई। उन्होंने संस्थान के दानदाताओं, यात्रियों व साधकों के निवास व सुविधाओं का अवलोकन कर उचित मार्गदर्शन प्रदान किया। इसी दौरान उन्हें ऋषिकेश स्थित परमार्थ निकेतन का आमंत्रण प्राप्त हुआ। मां गंगा की आरती में सम्मलित होने के बाद उन्होंने ऋषिकेश के लिए प्रस्थान किया। जहां स्वामी श्री चिदानंद जी महाराज से भेंट की एवं आशीर्वाद प्राप्त किया। ऋषिकेश जाते हुए वे नीलकंठ मार्ग से जब गुजरे तो उन्हें बरबस उनके परम पूत्य दादाजी श्री मदन लाल जी का स्मरण हो आया। इस प्रस्थान पर उनके दादाजी कुछ समय बिताकर साधना की थी। यहां उन्होंने उस स्थल की प्रणाम किया।

परमार्थ निकेतन आश्रम पहुचने पर भैया और पूरा परिवार वहां के आध्यात्मिक वातावरण से भाव विभोर हो उठा। उन्होंने वहां एक अटूट और अविरल शांति महसूस की। इसी दौरान पूज्य स्वामी श्री महाराज पधारे जिनके श्री चरणों में परिवार ने नमन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। निकेतन में कुछ समय तक परिवार स्वामी के साथ ध्यानस्थ रहा। स्वामी चिंदानन्द महाराज ने इस बाद पर प्रसन्नता व्यक्त की कि मदनलाल जी अग्रवाल की चौथी पीढ़ी भी सेवाकार्यों में प्रवृत है। स्वामी जी ने परम पूज्य कैलाश मानव जी व परिवार के प्रति शुभकामनाएं प्रकट करते हुए प्रशांत जी को निरन्तर सेवापथ पर बढ़ते रहने का आशीर्वाद दिया उन्होंने हरिद्वार में संस्थान के खालसा वैरागी सेवा शिविर में पधारने की स्वामी जी से अर्भ्यथना करते हुए उनका मेवाड़ी पाग व श्री नाथ जी दुपट्ट से सम्मान किया। तदुपरान्त गंगा आरती के बाद स्वामी जी का अनुसरण करते हुए परिवार दिव्या गंगा मां के तटपर उस स्थान पर गया जहां भगवानन शिव की विशाल मनोहारी मूर्ति अपनी छठा बिखेर रही थी। परमार्थ निकेतन में अनाथ बच्चों की शिक्षा–दीक्षा और आवास व्यवस्था को देखकर भैया जी व वंदना जी अभिभूत हो उठे। उनकी आंखों से प्रेमाश्रु छलक पड़े गंगा तट पर विश्व शांति यज्ञ में आहुति भी प्रदान की गई। पुनः हरिद्वार पहुंचकर भैया जी ने निर्मोही, निर्वाणी दिगम्बरी सहित विभिन्न अखाड़ों में जाकर संतो के दर्शन किए।

सेवा शिविर में आने पर ज्वालापुर विधायक सर्वश्री सुरेश राठौड, डॉ. संजय जी, शिवालिक नगर चेयरमैन श्री नरेश जी शर्मा, श्री रतन मणी डेमाल, श्री अमित मेहरा, वशिष्ट पत्रकार सुधीर शर्मा, विकास तिवारी, अनिल पुरी, संजय आर्य, रिपलिक भारत, न्युज चैनल क नेत्रपाल जी, सेक्टर मजिस्ट्रेट मनीष सिंह, अपर मेला अधिकारी, कौस्तुभ जी, पुलिस उपअधीक्षक जे. आर. जोशी, समाज सेवी श्रीमति रागिनी तिवारी, डॉ. विशाल गर्ग, गंगा सभा के महामंत्री तन्मय वरिष्ठ पंजाबी महासभा के प्रदेश अध्यक्ष जगदीश पहावा, लघु व्यापार ऐसोशियन के प्रदेश अध्यक्ष श्री संजय चौपड़ा त्रिवेणी धाम के महामंडलेश्वर से भेंट हुई।

दूसरे दिन 11 अप्रेल को वंदना जी ने विभिन्न सेवा कार्यों में हाथ बंटाया। और संतजन को भोजन करवाया। शाम को 'हर की पौड़ी' पर मां गंगा में डुबकी ली। उन्होंने एवं भैरव अखाड़ा भर्तृहरि की तपस्थली और ब्रहमकुण्ड के सभी दर्शन किए। बाद में वे जूना अखाड़ा, अग्नि एवं भैरव अखाड़ा के संतों व नागा साधुओं के दर्शन कर उनसे भभूत का प्रसाद प्राप्त किया। यहां से भैया जी परिवार पंतजलि योगपीठ के लिए रवाना हए जहां उन्होंने रामदेव जी व आचार्य बालकृष्ण जी से भेट की। स्वामी रामदेव जी और बालकृष्ण जी ने परम पूज्य गुरुदेव श्री मानव जी की कुशलक्षेम पूछी और उनके साथ बिना क्षणों को याद किया। स्वामी जी ने अपने यहां प्रशिक्षित योग प्रशिक्षकों को नारायण सेवा संस्थान में स्कूली बच्चों व साधकों को योग प्रशिक्षण देने के लिए भेजने का आश्वासन दिया। 12 अप्रैल को अमावस्या का शाही स्नान था। जिसमें गुरूदेव मानव जी के प्रतिनिधि के रूप में प्रशांत जी ओर महेश जी अग्रवाल ने एक स्थ में निर्वाणी अखाड़े की पेशवाई निकालते हुए यहीं शाही स्नान किया। शाही स्नान के बाद उन्होंने तुलसीपीठ के रामभद्राचार्य जी से आशीर्वाद प्राप्त किया।

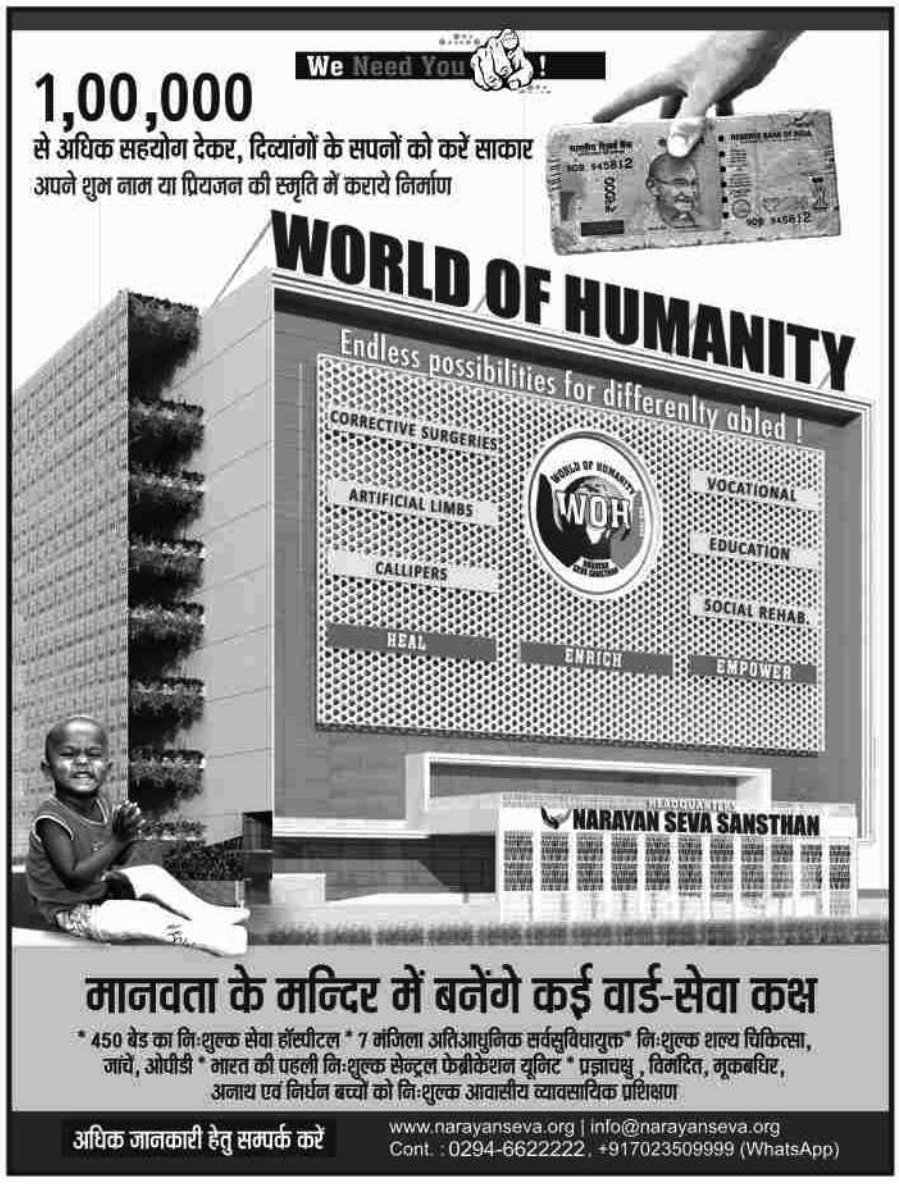

सम्पादकीय

किसी की मदद करने के लिये सबसे आवश्यक क्या है? इसके अलग–अलग उत्तर हो सकते हैं, और होंगे ही। हरेक व्यक्ति का अपना चिंतन होता है, अपनी विचाराधारा होती है, अतः उत्तरों में भिन्नता स्वाभाविक है। ज्यादातर लोग मानते हैं कि किसी की मदद के लिये धन की आवश्यकता होती है। कोई बीमार है, भूखा है, दरिद्र है तो उसे उबारने के लिये धन ही तो उसकी मदद कर सकता है। यह सही भी है। किन्तु थोड़ा गहराई से सोचें तो लगेगा कि धन से भी ज्यादा महत्व की बात है मन। यदि किसी के पास धन है पर मन नहीं है तो वह संपन्न होते हुए भी किसी की मदद नहीं कर पायेगा।

इसके विपरीत यदि धन नहीं है पर मन है मदद करने का तो धन का जुगाड़ कहीं न कहीं से हो ही जायेगा। दुनिया भर में अनेक ऐसे लोग हैं जो धनी नहीं है पर सेवा के लिये समर्पित हैं। अन्य लोग उनके मन को देखकर सहयोग करते रहते हैं। अनगिन संस्थाएं इसी आधार पर ही संचालित हो रही हैं। हम तो बस मन बना लें, धन तो स्वतः आ जायेगा।

कुछ काव्यमय

सेवा के लिये सच है कि
धन का महत्व है।
किन्तु धन नहीं मन
सेवा का असली तत्व है।
धन तो मिल जाता है,
औरों के सहयोग से।
पर मन तो जागृत होता है
भावों के संयोग से।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

लोक कल्याण की भावना

लोक–कल्याण की भावना हमारे जीवन का लक्ष्य है पीड़ितों, असहायों, निर्धनों, दिव्यांगों की सेवा यही है लोक कल्याण आज के भौतिकतावादी और अर्थवादी युग में अर्थ के बिना लोक–कल्याण के कार्यों में रूकावटें आती हैं इन रूकावटों को समर्थ और सम्पन्न महानुभावों द्वारा उदार दान–सहयोग से दूर किया जा सकता है। भगवान श्री कृष्ण ने पाण्डुनन्दन अर्जुन को अपने उपदेश में यही सीख दी थी

"मरुस्थल्यां यथावृष्टिः
क्षुधार्ते भोजनं तथा।
दरिद्रे दीयते दानं
सफलं तत् पाण्डुनन्दन।।"

मरुस्थल में होने वाली वर्षा सफल है भूखे को भोजन करवाना सफल है और दरिद्र निर्धन की सेवा के लिए दिया गया दान सफल है आपका यह संस्थान एक–एक मुट्ठी आटे से विगत 34 वर्षों से यही कर रहा है।

हजारों विकलांग बन्धुओं को सभी प्रकार के सर्वथा निःशुल्क सेवा से अपने पैरों पर खड़ा किया उन्हें चलने योग्य बनाया, जो पहले चारों हाथ–पैरों पर अपने जीवन का बोझ उन्हें रोजगार परक व्यवसायों में प्रशिक्षण दिया स्वावलम्बी बनाया उनके विवाह सम्पन्न करवाये उन्हें गृहस्थ जीवन का सुख दिया वर्तमान कोरोना काल में अनेक प्रकल्प चल रहे है और भी अनेक लोक– कल्याण के प्रकल्प यह है सूत्र रूप में नारायण सेवा।

आपमें से अनेक सहृदय बन्धुओं ने संस्थान में पधारकर इन सब सेवा–प्रकल्पों को प्रत्यक्ष देखा है तथापि पीड़ाओं का पूरी तरह उन्मूलन नहीं हुआ है–हजारों दिव्यांग भाई– बहिन बच्चे असहाय निर्धन अपने ऑपरेशन के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं आप जैसे दानी भामाशाह की आपकी ओर करूण–कातर दृष्टि से देख रहे हैं।

– कैलाश 'मानव'

कामयाबी कदम चूमेगी

जीवन की उपयोगिता केवल नैतिक मूल्यांकन द्वारा ही निर्धारित की जा सकती है। एक बार निश्चय कर लीजिए कि जब अपकी अंतरात्मा किसी कार्य को उचित बतलाए तो आप अनिश्चित और अकर्मण्य नहीं रह जाएंगे। बल्कि उस पर अग्रसर होंगे। समझ लीजिए कि एक मानव को दैवी वरदान की जितनी आशा हो सकती है उसकी कुंजी उसे प्राप्त हो गई है।

अपने कर्त्तव्य से बच निकल कर या उसकी अवहेलना करके आप सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। बुद्धिमान और सज्जन भीरूताजनित भय से नहीं डरते और जिस ओर उनका कर्त्तव्य संकेत करता है वे उसी दिशा में विश्वास पूर्वक बढ़ते चले जाते है। कर्त्तव्य के आह्वान पर परमात्मा में विश्वास रखते हुए वे अंसख्य खतरों का मुकाबला करते है। उन पर विजय पाते है। सच्ची सफलता के लिए धन शक्ति की नहीं, अपितु पूर्ण अनुशासित इच्छाशक्ति की आवश्यकता है। केवल वही हमारी हो सके है तो हमारा जीवन निष्फल रहेगा। हमें ऐसा कार्य कदापि नहीं करना चाहिए। जिससे हम लज्जित हों। अपने जीवन निर्माण हेतु सदा ऊपर की ओर देखो, नीचे की ओर नहीं । जो ऊपर उठना नहीं चाहता वह नीचे की ओर खिसकता है। जो जीव उठने की हिम्मत नहीं करता, रसातल में गिरता है।

जितने भी सफल लोग इस दुनिया में हुए है। उन्होंने इस मुकाम पर पहुंचने के लिए अथाह परिश्रम किया है। उन्होंने न दिन देखा, न रात न सुबह देखी, न शाम, निरंतर मेहनत की और सफलता के उच्चतम शिखर पर जा पहुँचे। हममें और उन सफल लोगों में फर्क सिर्फ इतना है कि उनमें अपने कार्य के प्रति पूर्ण समर्पण था मगर हम समर्पण नहीं करना चाहते हम रातों की नींद दिन का चैन नहीं खोना चाहते । हम कुछ नया सीखने और करने की बजाय इधर – इधर की बातों में वक्त जाया कर देते है। हम पाना बहुत कुछ चाहते हैं पर करते कुछ नहीं परिणामतः जैसा हम प्रयत्न करते हैं, वैसी ही सफलता मिलती है।

अतः जीवन में सफलता का मूल मंत्र है अपने कार्य के प्रति पूर्ण समर्पण । हम जिस किसी भी क्षेत्र में कार्यरत् है। और उस क्षेत्र में उन्नति के चरम शिखर को छूना चाहते हैं तो सिर्फ जरूरी ही नहीं। बल्कि अनिवार्य है कि हम लगातार कठिन परिश्रम, लगन, आत्मविश्वास, दृढ़ इच्छाशक्ति और पूर्ण समर्पित भाव के साथ कार्य करें। उस क्षेत्र में होने वाले किसी भी नए परिवर्तन अथवा खोज पर पैनी नजर रखें और अपनी योग्यता को भी उसके अनुरूप बढ़ाते रहें तो निश्चित रूप से सफलता के रास्ते, वाहें फैला कर आपका स्वागत करेंगे और कामयाबी आपके कदम चुमेगी।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

अलख निरंजन! ...आनन्द रहे! ...सुखी रहो !!. दूर से ही ये आवाजें कैलाश के कानों में पड़ी तो वह लकड़ी के टुकड़ों से खेलना छोड़ दौड़ा दौड़ा रसोई में गया और टांड पर रखे पीपे से आटा निकाल कर एक बड़े से बर्तन में भर लिया। भिक्षा लेने दो साधु अक्सर उसके घर आया करते थे। उनके कन्धों पर कपड़े का झोला लटका रहता था जिसमें घर घर जाकर वे भिक्षा एकत्र करते थे।

कैलाश मुश्किल से 5–6 साल का होगा। उसके बाल मन में यह सवाल कौंधता था कि इन साधुओं को घर घर जाकर आटा मांगने की जरूरत क्यूं। कोई एक घर ही इन्हें पूरा आटा क्यूं नहीं दे देता। अपनी इसी उलझन को हल करने वह उनके झोले में अधिकाधिक आटा भर देना चाहता था। सोहनी, उसकी मां जिसे वह बाई कहता था उसे छोटे से कटोरे में आटा भरकर देती थी जिससे उसका जी नहीं भरता था। आज बाई कहीं नजर नहीं आ रही थी वह झट से अपनी ईच्छा पूरी करने में जुट गया।

इधर–उधर देखा और भाग कर साधुओं के झोले में आटा उंडेल दिया। जल्दी ऐसी मची थी कि कब उसके बर्तन से थोड़ा आटा जमीन पर गिर गया उसे पता ही नहीं चला। थोड़ी देर में सोहनी लौटी तो आंगन में गिरे आटे को देख मुस्करा दी। वह अपने दूसरे बेटे कैलाश को भली भांति समझती थी। उसे बुलाया और पुचकार कर कहा–क्यूं रे? भाग कर क्यूं गया ? मैं होती तो क्या मना करती ? अपनी चोरी यूं पकड़े जाने से कैलाश जमीन में नजरें गड़ाये सब सुनता रहा।

पुनः प्रारम्भ : अंश-3

प्रेरक – विचार

जिंदगी वन डे मैच की तरह है।
जिसमें रन तो बढ़ रहे हैं
पर ओवर घट रहे हैं
मतलब धन तो बढ़ रहा है।
पर उम्र घट रही है।
इसलिए हर दिन
कुछ न कुछ पुण्य के
चौके छक्के लगायें..।
ताकि ऊपर बैठा एम्पायर हमें
खुशियों की ट्रॉफी दे..।
खुश रहिये मुसकुराते रहिये।।

राहुल को लगे कृत्रिम पैर

शाहदरा– दिल्ली निवासी एवं संस्थान के विशिष्ट सेवा प्रेरक श्री रविशंकर जी अरोडा ने लॉक डाउन (कोरोना काल) के दौरान दोनों पांवों से दिव्यांग एक युवक के कृत्रिम पैर लगवाए।

दिल्ली के बदरापुर निवासी युवा क्रिकेट खिलाड़ी 2018 में जबलपुर मैच खेलने गए थे। लौटते समय चलती ट्रेन से नीचे गिर पड़े और पांव पहियों के नीचे आकर कट गए थे। राहुल को अब चलने फिरने में किसी सहारे की जरूरत नहीं है। उन्होंने संस्थान एवं व उसके विशिष्ट सेवा प्रेरक–अरोडा जी का आभार व्यक्त किया है।

अनुभव अमृतम्

डॉक्टर विपिन बख्शी साहब जो बाद में जुड़े, जो विपिन बक्सी साहब अंतरिक्ष से हमें आशीर्वाद दे रहे हैं। बड़ौदा के रहने वाले थे, और डॉक्टर आर.के.अग्रवाल जनरल सर्जन ये कैसा भगवान काम करा रहे? मुझ में रहकर मुझको मेरी खोज करवा रहे हो। सोचता हूँ कौनसी शक्ति थी? गेहूँ की बोरियाँ निकाली गई, सफाई की गई, धोया गया, दो ट्रक सामान उदयपुर से आया ओपीडी की गई। रोगी भाई–बहन बारह सौ आये थे।

दूर–दराज से आये, जन्मजात विकंलागता वाले आये, पुराने पोलियो वाले भी आये सात दिन भगवान ने मुझे प्रेरणा दी। मैं वहीं रहा, नरेन्द्रजी भी अमरिका से आये 151 करीबन ऑपरेशन हो गये थे। एक बार चैतन्य महाप्रभु शिष्यों के साथ भ्रमण कर रहे थे, तभी उधर से एक महिला गुजरी तो उनका एक शिष्य उस महिला को निहारने लगा, जब तक महिला नजरों से ओझल नहीं हुई। चैतन्य महाप्रभु ने शिष्य से कहा– क्या देख रहे हो? तो शिष्य उस महिला की खूबसूरती की प्रशंसा करने लगा। चैतन्य महाप्रभु बोले– आज मैं तुझे दुनिया की सबसे खूबसूरत महिला के दर्शन करवाता हूँ, तभी उन्होंने विष्णु भगवान से विनती की कि प्रभु अपने मोहिनी रूप के दर्शन करवा दो, मेरा ये शिष्य कामुक हो गया। तभी भगवान ने मोहिनी रूप धारण किया व दर्शन दिये, शिष्य को अपराध बोध हुआ, चैतन्य महाप्रभु के चरणों में गिर पडा, चैतन्य महाप्रभु ने उसे गले लगा लिया। उदयपुर में भी मानव मंदिर में भी ऑपरेशन प्रारम्भ किये बहुत समय नहीं हुआ था। 20 फरवरी 1997 कीबात है। ये कैसी तरंगे? ये कैसी संज्ञा? ये वो संज्ञा करना है, ये वो परमात्मा करवायेंगे।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 128 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023